हम आईने में या तस्वीरों में जो देखते हैं, वो हमारा शारीरिक या भौतिक रूप होता है। इसका दायरा हमारा नजरिया होता है, जिसे हम अपनी आंखों से देखते हैं। क्या हमारे कुछ रूप ऐसे भी हैं, जिन्हें हम देख नहीं सकते। हमारे इस दृष्टिकोण के दायरे से आगे क्या है? अब यह जानने का समय है...

आकार और निराकार

किसी की जिंदगी में दिलचस्पी लेने और उसे समझने के लिए यह जरूरी है कि हमें उस कोशिश से कुछ सीख या कोई संदेश मिले। जब कोई कहानी आपकी जिंदगी का रुख बदलकर एक नई दिशा देती है और उसमें कुछ नई खूबियां शामिल करती है, तभी वो कहानी आपकी जिंदगी बदलने के लिहाज से मुकम्मल मानी जाती है।

गुरुदेव की कहानी शून्य से शुरू ज़रूर होती है लेकिन आगे बढ़कर शारीरिक उपलब्धियों के शिखर पर पहुंचती है। यदि आध्यात्मिक विज्ञान के नजरिए से देखें तो ये कहानी इंसानी हसरतों की नई मिसालें कायम करने का एक सिलसिला बन जाती हैं।

अगर गुरुदेव की जिंदगी बयां करती पॉडकास्ट की ये सीरीज़ आपको अपनी हदों से आगे ले जाती है, तो मानकर चलिए कि यह खामोशी की सच्ची आवाज है। जिनके मुक़द्दर में है, वो इस आवाज को सुनेंगे, इसमें छिपे संदेशों को सुनेंगे और अपने नज़रिए को बदलने की कोशिश करेंगे। ये मुश्किल जरूर है लेकिन नामुमकिन नहीं। ये एक अलौकिक एहसास है।

आइए, गुरुदेव की जिंदगी के सफर को एक रोशनी बनाएं और उनकी जिंदगी को एक दिशा। उनके आशीर्वाद को अपने बदलाव का जरिया बनाएं और अपने अंदर के उस स्वरूप तक पहुंचें, जो अदृश्य है। आइए चलते हैं, बदलाव के इस सफर पर... बढ़ते हैं, अपने अंदर की खामियों से अंदर की खूबियों की तरफ।

चलिए हम उन्हें अपना आध्यात्मिक वैद्य बनाएं!!

हम इसकी शुरुआत उन अलग-अलग रूपों से करते हैं, जिन्हें मिलाकर एक इंसान बना है। एक रूप वो, जो आप अपने सामने देखते हैं। दूसरा, आपका सूक्ष्म शरीर या अंतरात्मा, जो आप अक्सर अपनी स्वप्न अवस्था में देखते हैं, और कुछ मौकों पर खुली आंखों से भी, तब जब आप ध्यान की मुद्रा में होते हैं।

किसी इंसान का तीसरा स्वरूप उसके अपने गुणों का अक्स होता है। सरल शब्दों में कहें तो गुण किसी भी चीज की ऊर्जा और खूबियों का आईना होता है। वो आपकी प्रकृति के प्रकार

हैं, जिन्हें रचनात्मक ऊर्जा या शक्ति कहा जाता है। इन्हें तमस, रजस एवं सत्व के नाम से भी जाना जाता है। तमस का मतलब है आपकी जड़ता या आलस्य। रजस आपके उत्साह और गतिशीलता को दर्शाता है और सत्व आपकी सरलता और उच्च विचारों का प्रतीक है।

किसी इंसान के गुणों को देखने परखने के लिए सिर्फ आंखें काफी नहीं हैं, इसके लिए दिव्य दृष्टि या तीसरी आंख की जरूरत होती है या फिर यह ख्वाबों की स्थिति में नजर आते हैं। यदि यह सब आपको कोई गहरा राज़ मालूम होता है, तो यकीनन ये ऐसा ही है।

इस मौके पर ये शेर बड़ा मौजू होगा

कोई समझेगा क्या राज़-ए-गुलशन

जब तक उलझे न कांटों से दामन

मैं अक्सर सोचता हूं कि क्यों बहुत-से लोगों ने गुरुदेव को शिव रूप में महसूस किया। क्या यह सिर्फ एक धार्मिक अनुमान है या फिर हमारे मन का आभास, क्योंकि हमने सुना था कि गुरुदेव शिव के शिष्य थे? शंकर भगवान के चित्र हमारे स्थानों पर भी लगे हुए हैं, जो गुरुदेव द्वारा स्थापित किए गए उपचार के केंद्र हैं।

शिव को परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह तो चेतना की वो स्थिति है, जहां हम उस परमशक्ति से रूबरू होते हैं, और जहां हम खुद को, पहचाने गए सूक्ष्म कण के रूप में नहीं देखते। इसका साक्षात-स्वरूप है शिव लिंगम।

बहुत-से लोगों ने अपने सपनों और ध्यान मुद्रा में, और कुछ अवसरों पर खुली आंखों से, गुरुदेव को शिव रूप में देखा, और कुछ अब भी देखते हैं। इस पॉडकास्ट में पेश की गई चर्चाएं उनके अलौकिक आभास की बस एक झलक भर है। लेकिन मैं यहां उन पहेलियां को सुलझाना चाहता हूं ताकि आप उस स्वरूप को देख सकें, उस आकृति को देख सकें जिसे हम गुरुदेव कहते हैं।

आइए चलते हैं कानपुर, सुरेंदर जी और उनकी बहन राजलक्ष्मी से मिलने, जिन्हें प्यार से गुड्डन बुलाया जाता है। वे दोनों वहां स्थान चलाते हैं।

सवाल : तो आपके ऐसे कोई सपने हैं, जो गुरुदेव के साथ हैं, जो आप बताना चाहेंगी?

राजलक्ष्मी जी : हम गुरुजी के पास आए थे, थोड़े दिन हो गए थे, मतलब कुछ साल हो गए थे। तब मैंने सपना देखा कि मेरे फादर की तबीयत बहुत खराब है। और फादर लेटे हुए हैं और हम लोग गुरु जी को ढूंढ रहे हैं, गुरु जी कहां है, गुरु जी कहां है। हमको कोई बताता है कि जाओ वहां जाकर देखो। मेरे को अभी तक पूरा याद है। मैं जाती हूं गुरु जी को ढूंढने के लिए। मैं वहां जाकर झांककर देखती हूं, तो देखती हूं कि गुरु जी की जगह शंकर जी बैठे

दिखाई दे रहे हैं। और गुरु जी कभी शंकर जी दिख रहे हैं और शंकर जी कभी गुरु जी दिख रहे हैं। ये चीज कई बार देखी।

दिल्ली के रहने वाले रवि त्रेहन जी गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य हैं और कीर्ति नगर में स्थान चलाते हैं। गुरुदेव के रूप को देखने का उनका अनुभव रिकॉर्ड करने लायक है।

रवि त्रेहन जी : एक गुफा में एक रोशनदान, रोशनदान से लाइट आ रही है। उसमें सलाखें-सी लगी हुई हैं रोशनदान में। वहां से रोशनी आ रही है। गुरुजी गुफा की जमीन पर बैठे हुए हैं। जिस तरह आप तस्वीर में देखते हैं, भगवान शिव का आकार। नीचे वो शेर की खाल है। गले में सांप है, बाजुओं में सांप है, त्रिशूल गड़ा हुआ है, धूनी रमी हुई है। वो गुरुदेव का चेहरा है। भगवान शिव की हर बात उस चेहरे में नजर आ रही थी। क्योंकि मैंने उनसे दो-तीन दिन पहले ही पूछा था। गुरु जी, आप मुझे वो दर्शन कराओ, जो आप असल में हो। क्या है, आप जो नजर आते हैं वो तो नहीं हैं। हमारा, मेरा और आपका रिश्ता पिछले कई जन्मों से है तो मैं आपको देखना चाहता हूं। फिर अगले दिन जब मैं गया, तो मैंने कुछ नहीं कहा, उनसे अभी शेयर तक नहीं किया और मुझे देखते ही अपने होठों पर उंगली रखकर बोले, 'चुप, जो तूने देख लिया अब उसका जिक्र नहीं करना, वर्ना ब्रेक लग जाएगी।' मैंने उनसे कुछ भी नहीं कहा, लेकिन उन्होंने मुझसे यह शब्द कहे थे।

अब आप आगे जो सुनेंगे वो वाकया कुछ ऐसा है, जो आपको वेद पुराणों में भी नहीं मिलेगा। अपने शुरुआती वर्षों में गुरुदेव अपने नए शिष्यों को अपनी अलौकिकता का प्रमाण देते थे। इस कहानी में जो नए शिष्य हैं, वो हैं टीम ज्वाला जी और वो स्थान है गुड़गांव का शिवपुरी, जहां गुरुदेव 70 के दशक के शुरुआती सालों में रहा करते थे।

हिमाचल प्रदेश के शंभू जी और रामनाथ जी गुरुदेव से मिलने आए थे। गुरुदेव ने कथोग के शिविर में उन्हें सेवा में लगाया था। उनके के आग्रह पर गुरुदेव ने **शंभू जी का** तीसरा नेत्र खोला था, जिसे हम दिव्य दृष्टि भी कह सकते हैं। ताकि वो अलग तरह की वास्तविकता के दर्शन कर सकें। यह शंभू जी की सहनशक्ति से कहीं ज्यादा था। उनके बेटे पप्पू पहाड़िया वो किस्सा याद करते हैं, जो उन्होंने अपने पिता से सुना था।

पप्पू पहाड़िया : रात को ऊपर सोते थे, छत के ऊपर सारे इकट्ठे थे, बैठे-बैठे वह बात चली उसके बारे में।

सवाल : किसके बारे में?

पप्पू पहाड़िया : दिव्य दृष्टि के बारे में।

अच्छा

पप्पू जी : रामनाथ जी तो उनको कहते हैं कि यह सब ऐसे ही हैं पांच मुखी सिर, यह कुछ नहीं होता। यह ऐसे ही बनाई हुई बातें हैं। तो मेरे पिताजी (शंभू जी) ने भी समझाया उनको कि ऐसी बातें मत किया करो, यह सब चीजें होती हैं। तो वो कहते हैं, "मैंने तो कभी देखा नहीं।" तो गुरु जी बैठे हुए थे, हंस रहे थे। उन्होंने थोड़ा इशारा किया कि भई, इसको कुछ दिखाना पड़ेगा। वो सो गए। सुबह-सुबह 4 बजे के आसपास का टाइम था तो उस वक्त बाहर गेट पर... यह शिवपुरी की बात है। तो वहां गेट पर किसी ने खटखटाया तो गुरुजी उठे और पिताजी को बोला जाओ देखो कौन है। तो रामनाथ जी भी उठ गए थे। वो नीचे आए और जैसे ही उन्होंने गेट खोला तो देखा कि एक भयानक शक्ल वाला कोई खड़ा है। उसकी शक्ल इतनी भयानक थी जैसे राक्षसों की होती है। पिता जी थोड़ा सकपकाए और तेजी से अंदर आ जाए। देखा तो रामनाथ जी ऊपर से उतर रहे थे। वो भी वहां गए, उन्होंने भी देखा, तो उनको भी वही सीन नजर आया। वो घबरा गए। इतने में गुरुजी भी ऊपर से उतरकर नीचे आ गए और कमरे में चले गए। तो जैसे ही वो कमरे में गए, तो वहां उन्होंने गुरुदेव का पांच मुखी वाला रूप देखा। पिताजी को तो खैर इन चीजों के बारे में पता था, वह तो जानते ही थे। रामनाथ जी बहुत घबरा गए थे। फिर गुरुजी अपने सामान्य रूप में आ गए और इनकी जो दिव्य दृष्टि थी वो सारी बंद कर दी उन्होंने।

राज कपूर जी, जो खुद उस वक्त उस कमरे में मौजूद थे, इस पूरे घटनाक्रम को थोड़े अलग, लेकिन बड़े अनोखे ढंग से याद करते हैं,

राज कपूर जी : तो ऐसा था कि हम गुरुजी के पास गए। पहली दफा तो हम गुरु पूर्णिमा के दो-तीन दिनों बाद गए थे। उसके बाद हम फिर गए गुरु जी के पास, तो शंभू जी वहां थे, जो हिमाचल के ज्वाला जी में मंदिर के पुजारियों के परिवार से थे। तो उन्हें गुरु जी ने 5 साल दिए थे, जब वो हिमाचल गए थे। उनको यह कहते हुए 5 साल दिए थे कि "बेटा तेरी उम्र तो खत्म हो गई थी, इसलिए मैंने तुझे जिंदगी के 5 साल और दिए हैं।" शंभू जी बहुत खराब हालत में थे। शंभू जी भी वहां थे और शंभू जी ने पूछा, "गुरु जी यह जो पांच मुख हैं ...." यह शिवपुरी की बात है, "गुरु जी यह सब संभव कैसे हो सकता है।" तो गुरु जी कहते हैं, "बिल्कुल ठीक है बेटा, पांच मुख होते हैं और इसमें कोई ऐसी बात नहीं है।" तो शंभू जी ने कहा, "मुझे दिखाइए पांच मुख", तो गुरुजी ने कहा, "बेटा तू यह बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। तू

देख ले बेटा तुझे 5 साल लेना है जिंदगी के, या यह मुख देखना है।" तो शंभू जी ने कहा, "गुरु जी मुझे तो मुख दिखा दो मेरी जिंदगी जो भी है ले लो आप।"

तो गुरु जी ने अपना चेहरा दिखाया शंभू जी को, वो पांच मुख दिखाए और शंभू जी बेहोश हो गए। हम वहां खड़े हुए थे, किसी को दिखाई नहीं दिया सिर्फ शंभू जी को दिखाई दिया। और वो बेहोश हो गए। गुरु जी ने उनको छींटे मारे और बिठा दिया। इसके बाद गुरुजी बाहर चले गए। तो हमने पूछा, "शंभू जी, क्या हुआ?" तो उन्होंने कहा, "यह जो सामने मुख है ना, वो पांच मुख दिखाई दिए।" तो गुरु जी का कहना था कि बेटा यह 5 साल मैं ले लूंगा अगर तू मुख देखेगा, लेकिन गुरु जी बहुत उदार थे, उन्होंने उस पर भी उन्हें 5 साल दिए। 80 के दशक के अंत में शंभू जी का निधन हुआ था, वो 5 साल बिताने के बाद जो उनको दिए गए थे।

सवाल : शंभू जी ने गुरुदेव के उस पांच मुखी रूप का वर्णन किस तरह किया था?

राज कपूर जी : उन्होंने कहा, "मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका।" उनमें इतनी तेज रोशनी थी और जो मुख थे, वो इतने बड़े-बड़े थे कि वो इसे बर्दाश्त नहीं कर सके। और यह देख कर वो बेहोश हो गए। गुरु जी ने बताया, "बेटा इसको करने के लिए बड़ी शक्तियां चाहिए, इसको देखने के लिए।" उन्होंने फिर उदाहरण भी दिया, "बेटा जैसे लाइट को तुम देखते हो। जब बहुत ज्यादा वॉट हो या बहुत ज्यादा पावर हो तो तुम लाइट को नहीं देख सकते।"

शंभू जी की कहानी काफी आश्चर्यजनक है।

आइए अब रुख करते हैं गुरुदेव के उन संभव रूपों की तरफ, जो आपके भी हो सकते हैं।

अगर हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहूं तो गुरुदेव मायावी रूप के थे। देखने में तो वो एक सीधे-सादे और आकर्षक आदमी नजर आते थे, लेकिन उनके बारे में सबकुछ सामान्य रूप से मायावी था। जब लोग उनसे बात करते थे, तो एक अलग तरह की कशिश महसूस करते थे, लेकिन दुर्भाग्य देखिए जनाब... गुरुदेव के पास ना तो फरिश्तों की तरह पंख थे और ना ही देवताओं की तरह दिखने वाला आभामंडल था।

बस, जब उनकी मर्जी होती तब वो ऐसे रूप दिखाते जो सामान्य या मानवीय नहीं होते थे। किसी ने उन्हें शिव रूप में देखा और सुनेत के सुरेश कोहली जी जैसे चंद लोगों ने उन्हें दीवार पर उभरी हुई आकृति के रूप में देखा। और क्वात्रा जी, जिन्होंने उन्हें प्रकाश रूप में देखा, आगे अपना अनुभव बताते हैं,

क्वात्रा जी : ये महाशिवरात्रि से एक दिन पहले की बात है। उस समय सुबह के 3 बजे थे। और सुबह 3 बजे मैं देखता हूं कि मैं स्थान पर गया और वहां बहुत लंबी कतार थी। लोग गुरुजी की दिव्य झलक पाने के लिए लंबी कतार में खड़े थे। जब मेरी बारी आई तो मैं अंदर गया। जब मैंने वहां प्रवेश किया तो मैंने देखा दो लोग वहां खड़े हैं। उनमें से एक सबसे जल्दी करने को कह रहा था। वो कह रहा था, "मत्था टेको और आगे बढ़ो, मत्था टेको और आगे बढ़ो..." लेकिन मैं वहीं खड़ा रहा। उसने मेरा हाथ खींचकर कहा, "आप भी माथा टेकिए और चलिए।" मैंने कहा, "मैं ऐसे तो नहीं जाऊंगा। मैं इस तरह मत्था टेकने के लिए नहीं आया हूं। मैं अपने हिसाब से मत्था टेकूंगा।" तो गुरु जी ने कहा, "आ गया, पुत्र तू?"

मैंने कहा, "गुरु जी, लेकिन मैं ऐसा तो मत्था नहीं टेकूंगा। आप को यह बताना होगा कि आप मेरे गुरु हैं। चरणों में मत्था तभी टेकूंगा, जब आप मुझे यह विश्वास दिला देंगे कि आप मेरे गुरु हैं।" तो उन्होंने कहा, "ओके बेटा"। फिर उन्होंने चौकी मारी और पद्मासन में बैठ गए। पद्मासन में बैठकर उन्होंने हाथ उठाए। उनको उसको उठाने की देर थी, आज भी बात करते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। इतनी चमकदार रोशनी थी, जैसे सैकड़ों सूरज एक साथ निकल आए हों। इतनी लाइट थी कि मैं बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं उनके चरणों में गिर गया। जब मैं उनके चरणों में गिरा तो उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरे सिर पर रख दिए। मुझे यह नहीं पता कि मैं कितनी देर उनके चरणों में पड़ा रहा। क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, मुझे कुछ नहीं पता। जब मैंने सिर उठाया, तो बस रोशनी ही रोशनी थी। मैंने आशीर्वाद लिया और मैं वापस आ गया। मैं उस घटना की बात कर रहा हूं जो 1980 या 81 में किसी समय हुई थी।

हाथ पर हाथ रखा उसने तो मालूम हुआ,

अनकही बात को किस तरह सुना जाता है।

अनकही बात को किस तरह सुना जाता है।

कई बड़े संतों ने अपने विराट रूप दिखाए, जो लगभग 20 फीट ऊंचे रहे होंगे। कृष्ण ने महाभारत में दिखाया और औघड़ ने गुरुदेव के घर पर। लेकिन मैंने कभी ये नहीं सुना कि कोई संत 5 फीट 8 इंच की ऊंचाई से 3 या 4 फुट के हो गए हों। लेकिन गुरुदेव में अपने शरीर को आकार देने या उसे निराकार करने की काबिलियत थी। और गुप्ता जी इसके साक्षी थे!

गुप्ता जी कई दशकों से गुरुदेव के शिष्य रहे हैं और इस समय वे हिमाचल प्रदेश के परवानू में स्थान का संचालन करते हैं। वो बहुत लोकप्रिय हैं, लेकिन बड़े सरल स्वभाव के इंसान हैं।

उनके स्थान पर आने वाले लोग उनके नाम की कसमें खाते हैं और उनके ख्याल रखने वाले स्वभाव की दुहाई देते हैं।

गुप्ता जी : नूरपुर से हम लोग आए थे। गुरुजी पास के अपने फॉर्म में गए थे। वहां रह रहे थे। हम शाम के समय बाहर खड़े थे और गुरुजी अंदर थे। हमने गुरु जी को छोटे से कद में देखा।

सवाल : जी

गुप्ता जी : गुरुजी फार्म के हाल में थे हमने उन्हें शीशे में देखा, वो हमें बड़े छोटे से कद में नजर आ रहे हैं।

सवाल : कितने कद में?

गुप्ता जी : तीन-चार फुट के होंगे

सवाल : तो आपने खुली आंखों से देखा?

गुप्ता जी : हां, वो दूर थे। हम मिले नहीं क्योंकि वो नहीं मिल रहे थे। तो यह हमने देखा।

रवि त्रेहन जी एक दिलचस्प घटना याद करते हैं, जिसका विषय भी बड़ा अनोखा है। ये है बायलोकेशन, याने एक ही समय पर दो अलग-अलग जगह पर मौजूदगी।

रवि जी : वह एक ही समय पर एक से ज्यादा जगह पर मौजूद रह सकते थे। तो यह ऐसा है, जब आप एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं, जब आपमें खुद को शारीरिक रूप से दृश्य और अदृश्य करने की क्षमता आ जाती है। ऐसे बहुत से किस्से हैं गुरुजी के। नागपुर में वो बाहर बैठे हैं, कैंप लगा हुआ है और लोग भी उनके साथ पार्क में बैठे थे। अचानक गुरु जी को लगा कि उन्हें एक बहुत जरूरी कॉल आने वाला है। वो उस कॉल को लेने के लिए कमरे में चले गए जबकि कमरा बाहर से बंद था। और एक बंदा इस ग्रुप में से उठकर फर्स्ट फ्लोर पर जाने लगा और उसने देखा कि गुरुजी तो कमरे में बैठे हैं। मैं बाहर गुरुजी को छोड़कर आया हूं और वो कमरे में बैठकर फोन पर बात कर रहे हैं। आखिर एक इंसान दो जगहों पर कैसे मौजूद रह सकता है? गुरु जी ने उसे देख लिया और उसको बुलाकर समझाया, इशारा किया, "तुमने इस बारे में कोई जुबान नहीं खोलनी है।"

सवाल : और फिर?

रवि जी : किसी तरह यह बात बाहर आ गई। दूसरी उस समय की बात है जब गुरुजी को एक बंदा उनके ऑफिस में मिला और दूसरा गुरु जी से आपके फार्म पर मिला। इसमें सिर्फ 5-10 मिनट का फर्क था। वो एक ही समय पर दो जगहों पर कैसे रह सकते थे। वह उस

कला को जानते थे या फिर उन्होंने अपने शरीर को साकार या निराकार करने की शक्ति हासिल कर ली थी।

सवाल : क्या उन्होंने कभी इसका जिक्र किया था या फिर यह सिर्फ हमारा अनुमान है?

रवि जी : नहीं, नहीं अनुमान नहीं है। जब हमने उनसे पूछा यह कैसे हो सकता है गुरु जी, कि कोई आपको आपके ऑफिस में मिल रहा है और 10 मिनट में आपसे फार्म पर मिल रहा है? तो वो मुस्कुरा दिए। गुरुजी ने बस एक मुस्कुरान दी। मेरा मतलब है उन्होंने इसे स्वीकार किया लेकिन इसे विस्तार से नहीं समझाया, लेकिन इसे माना जरूर।

के एल बख्शी लंबे समय से गुरुदेव के संपर्क में हैं। वे गुरुदेव की समाधि के निकट नजफगढ़ स्थान पर सेवा करते हैं। उन्होंने एक हैरान कर देने वाला अनुभव बताया। यह दो शहरों की नहीं बल्कि दो महाद्वीपों की दास्तान है।

बख्शी जी : हमारे विंग कमांडर थे, नाम मैं भूल गया हूं, वो गुड़गांव में रहते थे।

सवाल : वर्मा

बक्शी जी : विंग कमांडर वर्मा। उनके जो दमाद थे लंदन में...

सवाल : सुनील

बख्शी : जी हां

सवाल : सुनील घई

बख्शी जी : सुनील, सुनील घई। उनका फोन आया मेरे पास और उन्होंने कहा, "बख्शी जी गुरु जी यहां मेरे पास आए हैं, मेरी दुकान पर बैठे हुए हैं तो वो किसके ठहरे हैं?" मैंने कहा, "क्या बोल रहा है यार? गुरुजी तो यहां मेरे पास बैठे हुए हैं। और तुम कह रहे हो कि वो लंदन में हैं।" उन्होंने कहा, "नहीं, वो आए हैं। बड़े गुस्से में थे और चले गए हैं।"

यह चर्चा लंदन में रहने वाले सुनील घई और गुड़गांव के स्थान में गुरुदेव के साथ बैठे बख्शी जी के बीच हुई थी। लंदन में सुनील को गुरुदेव के दिखने के समय और गुड़गांव में बख्शी जी की गुरुदेव से मुलाकात के समय के बीच का फर्क, शायद कुछ मिनटों का ही था।

वैसे जनाब, इस तरह के सफर में वीज़ा की कोई जरूरत नहीं होती!

डॉ शंकर नारायण गुरुदेव की दोहरी मौजूदगी के एक और गवाह हैं। अब ऐसे में उनका आश्चर्यचकित हो जाना बिल्कुल लाज़मी है।

एक बार गुरुदेव ने डॉ. शंकर नारायण को पहाड़ी पर बने एक मंदिर के दर्शन करने के लिए भेजा। कहा जाता है कि वो मंदिर आदि शंकराचार्य ने स्थापित किया था। वहां डॉ. शंकर नारायण ने मंत्रों का जाप करते हुए कुछ समय बिताया और जब मंदिर से बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि उनसे कुछ दूरी पर गुरुदेव खड़े हुए थे। जब वो ऑफिस पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि गुरुदेव ऑफिस में मौजूद थे और ऑफिस छोड़ा ही नहीं था। ना कोई रॉकेट, ना हेलिकॉप्टर और ना ही कोई स्पोर्ट्स कार... बस बायलोकेशन।

सवाल : क्या आपने उनका कोई रूप देखा है या फिर आपने उन्हें अपने सपनों या ख्यालों में देखा है?

शंकर नारायण जी : हां, मैं आपको एक चीज बताता हूं। उन्होंने कहा, "डॉक्टर साहब वहां एक पहाड़ी है और वहां उस पहाड़ी पर एक शिव मंदिर है। लोग कहते हैं कि उस शिवलिंग को शंकराचार्य ने स्थापित किया था। इसलिए मैं उस मंदिर पर गया और वहां बैठा और मैंने वहां महामृत्युंजय जाप किया। जब मैं वापस लौटा तो मैंने देखा गुरुजी मंदिर के बाहर खड़े हुए हैं।

सवाल : वो वहां थे?

शंकर नारायण जी : वो वहां खड़े थे, लेकिन कुछ दूरी पर खड़े थे। जब मैं बाहर आया तो मैंने उन्हें वहां खड़े देखा। लेकिन गुरु जी असल में दूसरे ऑफिस में थे। मैंने गुरुजी से इसके बारे में पूछा। गुरुजी ने कहा, "इसमें कौन सी बड़ी बात है? तो क्या हुआ?" उन्होंने कहा, "तो तुम हर समय इतना डरता क्यों है?"

योग ने निर्माण काया की धारणा से हमारा परिचय कराया है। यह एक स्वरूप है, जिसमें आप एक खास आसन में बैठकर अपने भीतर की ऊर्जा को समेटते हैं, और फिर मंत्रों के प्रयोग से उस ऊर्जा को एक ऐसी शारीरिक ऊर्जा में तब्दील कर देते हैं, जो हूबहू आपके वास्तविक रूप जैसी नजर आती है। बहरहाल, मैं तो ये कहना चाहूंगा कि यह अपने आप में ही ब्रह्मा का रोल निभाने जैसा है।

प्राचीन काल के सिद्ध योगियों ने अपनी निर्माण काया की रचना की थी, ताकि वो अपने कार्मिक बोझ को कम करने के लिए अपने वास्तविक स्वरूप के साथ-साथ अपनी निर्माण काया का भी उपयोग कर सकें। इससे वो अपने शारीरिक रूप से कहीं ज्यादा हासिल कर पाते

थे। वैसे यह वर्णन आपको सिर्फ योग की किताबों में मिलेगा, लेकिन मैं यहां यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा हूं कि गुरुदेव की दोहरी मौजूदगी भी कुछ यही तो नहीं थी?

गुरुदेव के कई शिष्य भी वहां नजर आए, जहां वो हकीक़त में मौजूद ही नहीं थे। यदि इस बात को मानें, तो ये सारे अनुभव बताते हैं कि इस कला और विज्ञान को बहुत-से लोग जानते थे, भले ही वे शारीरिक रूप से इससे अनजान रहे हों।

मेरी अपनी भी एक निर्माण काया है लेकिन मैं इससे अनजान हूं। यह लोगों के सपनों और ध्यान मुद्रा में आकर उनके मुद्दे सुलझाती है। इसने उन्हें ऐसे मंत्र दिए, जिनके बारे में मैंने कभी नहीं सुना। हम आपस में गहरे दोस्त तो हैं, लेकिन शायद एक दूसरे के लिए अदृश्य हैं।

आशीष जी गोपीगंज के स्थान पर सेवा करते हैं। उन्होंने अपने गुरु, जो गुरुदेव के ही एक शिष्य हैं, को गोवा के एक रेस्टोरेंट में देखा, जबकि उनके गुरु शारीरिक रूप से दूसरे शहर में मौजूद थे।

आशीष जी : मैं अपने भाई के साथ छुट्टियां मनाने गोवा गया था। जब मैंने स्थान आना शुरू किया था, यह इसके तीन चार महीने बाद की बात है । वहां हम लेमन ट्री नाम के एक होटल में ठहरे थे। हम लोग लंच के लिए आए और वहां टेबल पर बैठे हुए मेरे भाई ने मुझसे पूछा, "तुम क्या आर्डर करना चाहते हो?" मैंने कहा, "तुम क्या कहते हो?" उसने कहा, "वेटर से सलाह ले लेते हैं। हमने उससे पूछा और उसने हमें प्रॉन्स मंगवाने की सलाह दी। प्रॉन्स आर्डर करते समय मेरे भाई ने मुझसे कहा, "पता नहीं क्यों पेट में दर्द हो रहा है, मैं रेस्ट रूम से 10 मिनट में लौटकर आता हूं। तब तक तुम ऑर्डर करो।" तो वो चला गया और मैं प्रॉन्स ऑर्डर कर रहा था। जैसे ही मैंने मैन्यू टेबल पर रखा, मैंने देखा मेरे गुरु ठीक मेरे सामने बैठे हैं। तो मुझे बड़ी हैरानी हुई। जाहिर है मैंने उनसे दुआ सलाम की और उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम यहां कैसे आए हो? मैंने बताया मैं यहां अपने भाई के साथ कुछ काम से आया था, तो यह काम के साथ-साथ छुट्टियां भी थीं।" तो उन्होंने कहा, "अच्छा तो तुम खाना ऑर्डर कर रहे हो। मुझे लगता है यहां का खाना बहुत अच्छा है।" तो मैंने कहा, "जी हमने कुछ प्रॉन्स आर्डर किए हैं। वो मेरी ओर देखकर मुस्कुराए और फिर उन्होंने मुझसे थोड़ी देर बातें कीं और कहा, "अच्छा, अब मैं चलता हूं।" और फिर वह चले गए। मैंने उत्साहित होकर मुंबई में मौजूद अपने एक गुरु भाई को कॉल किया। मैंने उससे कहा, "तुम जानते हो? मैं अभी-अभी हमारे गुरु से मिला। वो यहीं मौजूद थे।" वो हंसने लगा। मैंने कहा, "तुम हंस क्यों रहे हो?" उसने कहा, "आशीष मैं 2 मिनट पहले ही उनके ऑफिस से बाहर आया हूं। वो मुंबई में हैं।" मैंने कहा, "क्या बात कर रहे हो? मैं अभी तो उनसे मिला। हमने बात की और वो अभी-अभी गए हैं।" तो जब तक मैं बात कर रहा था तो जाहिर है मैं हैरानी में अपनी

कुर्सी से उठा और मैंने बाहर निकलकर देखा कि वो कहां गए हैं। मैं उन्हें नहीं ढूंढ सका। इस पूरी घटना ने 10 मिनट तक मुझे हैरान कर दिया और मैं यह समझ नहीं पाया कि अभी-अभी क्या हुआ है। तो मैंने इसमें दो-तीन चीजें सीखीं, जो मैं यहां बताना चाहूंगा। पहली तो जैसा हमने कहा कि वो एक ही वक्त पर दो अलग-अलग जगह पर थे। दूसरा उन के बारे में है। मैं यह इसलिए बता रहा हूं कि ऐसा हुआ था, जब मैंने प्रॉन्स खाना छोड़ दिया था। मैंने तय किया था कि मैं सी-फूड खाना छोड़ दूंगा और यह शायद वही याद दिलाने के लिए था कि मैं सी-फूड छोड़ चुका हूं। और तीसरा, उस दिन मैंने पूरी तरह यह महसूस किया और यह निर्णय लिया कि मैं खुद को पूरी तरह अपने गुरु को समर्पित कर दूंगा। यह मेरे गुरु के प्रति मेरा संपूर्ण समर्पण था।

मेरे बहुत-से गुरु भाइयों को उनके शिष्यों ने एक ही वक्त पर दो अलग-अलग जगहों पर देखा है।

राज कपूर जी उस पल के गवाह थे, जब शंभू जी को गुरुदेव के पांच मुखी रूप के दर्शन हुए थे। वो और उनके भाई नानक चंद जी कई दशकों से स्थान से जुड़े हुए हैं। तो यहां सुनिए बायलोकेशन की एक और दिलचस्प कहानी।

राज कपूर जी : बल्कि उनका यह भी था कि वह अपने शिष्यों के रूप में एक ही वक्त पर दो जगह मौजूद रहते थे।

सवाल : अच्छा

राज कपूर जी : उनमें से एक नानक भाई साहब थे (बड़े भाई) जो गुजर चुके हैं। वो कहते थे कि मैं तो उसके घर गया नहीं। एक बार मेरे साथ भी ऐसा हुआ। बसंत विहार की एक लेडी ने कहा, "आप मेरे घर आए थे।" लेकिन मैं तो उसके घर कभी नहीं गया। यह सब गुरु जी ने किया था। वो शिष्यों के रूप में गए थे और उन्होंने यह सब किया। तो नानक भाई साहब और मुझे, हम दोनों को एक जैसा अनुभव हुआ था।

हालांकि राज कपूर जी एक ऐसे इंसान हैं, जो इस बात की जीती जागती मिसाल हैं कि ठहरा हुआ पानी अक्सर गहरा बहता है। वो बहुत धीमे से और बड़े सलीके से बोलते हैं लेकिन ऑडियो रिकॉर्डिंग के लिए यह खासियत उतनी मुनासिब नहीं है। इसलिए मैं यहां वो समझाना चाहता हूं, जो उन्होंने कहा। दरअसल वो कहना चाहते थे कि कुछ लोगों ने जिनकी

उन्होंने सेवा की थी, उनको और उनके बड़े भाई नानक चंद जी को उन जगहों पर देखा, जहां वो मौजूद नहीं थे।

वीरेंदर जी हरियाणा के एक रिटायर्ड जज हैं, जिनका उल्लेख भृगु संहिता में मिलता है, जो ऋषि भृगु ने हजारों-हजारों साल पहले लिखी थी। अगर थोड़ा मजाकिया अंदाज़ में कहा जाए तो सवाल उठता है, क्या शोहरत की उम्र इतनी लंबी होती है?

उनके बहुत-से अनुभव हैं और इसे उन्होंने बखूबी समझाया भी है। यह बिल्कुल एक जज के आदेश की तरह स्पष्ट है।

सवाल : निर्माण काया को लेकर आपके कुछ दिलचस्प अनुभव थे। वो कौन से अनुभव थे, जिसने असल में आपके सामने निर्माण काया स्थापित की और यदि आप नाम भी बता सकें?

वीरेंदर जी : जब मैं साल 1984 में गुरुजी से पहली बार मिला या सटीक रूप से कहूं तो वो 16 अप्रैल 1984 का दिन था। उन्होंने मुझे तुरंत अपना शिष्य मान लिया और मुझसे कहने लगे, "तुम गुरु हो।" उस समय तो मैं कुछ समझ नहीं पाया और फिर उन्होंने मुझे सेवा करने को कहा। और फिर मैं उनसे नियमित रूप से मिलने लगा, हफ्ते या दस दिन में एक बार। मैं उनसे जाकर मिलता था। वो दिल से मिलते थे और मेरे प्रति बड़े उदार थे। तो एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, "मैं आपके दो स्वरूप निर्माण करूंगा। इनमें से एक अदालत में काम करेगा।" मैं एक न्यायिक अधिकारी था। मैं उस समय जज था। उन्होंने कहा, "और दूसरा स्वरूप मेरे साथ रहेगा। वो मेरे साथ काम करेगा।" मैं यह सब सुनता था और इसे लेकर काफी खुश होता लेकिन मैं इन्हें कभी समझ नहीं पाता था। उस समय वो मेरी समझ से परे था। फिर एक दिन डॉ जयसिंग खरप और उनकी पत्नी कृष्णा मेरे घर आए और मुझसे कहा, "आप सुबह इतनी तेज क्यों चल रहे थे? आप कहां जा रहे थे? हमने आपको पुकारा, लेकिन आपने कोई जवाब नहीं दिया।" मैं उस समय रोहतक में था और वो साल 1988 था। मैंने पूछा, "किस समय?" उन्होंने कहा, "सुबह 6 बजे।" मैंने कहा, "मैं उस समय अपने घर में अपनी प्रार्थना कर रहा था। वो कोई और रहा होगा।" उन्होंने कहा, "नहीं, वो आप ही थे। आप हमारे गेट के सामने से गुजरे थे, जब हम वहीं बाहर खड़े हुए थे।" मेरी आदत थी कि मैं अक्सर इस तरह के अनुभवों को नजरअंदाज कर देता था। इसके एक महीने बाद एक और घटना हुई। सुबह मेरे घर पर भान सिंह नाम के एक व्यक्ति आए। वो सुबह 8 बजे मेरे साथ चाय पीने आए थे। मैंने पूछा, "चौधरी साहब, आप यहां कैसे?" उन्होंने मुझसे कहा, "आपने ही तो मुझे अपने घर सुबह 8 बजे चाय पीने बुलाया था।" मैंने पूछा, "फिर, मैं कितने बजे आया था?" उन्होंने कहा, "वो सुबह 6 बजे की बात थी।" इसके बाद मैं

गुरुजी के पास गया और मैंने उनसे इस बारे में पूछा। उन्होंने कहा, "मैंने तुमसे कहा था ना कि मैं तुम्हारे दो रूप बनाऊंगा।" ये दो अनुभव ऐसे हैं जो मुझे अच्छे से याद हैं।

तो मौजूदगी दो जगह और वेतन केवल एक? क्या एक जज के लिए यह जायज ठहराया जा सकता है? मेरे ख्याल से गनीमत है कि वीरेंदर जी को अपने नंबर टू के लिए कोई टैक्स नहीं चुकाना पड़ा।

अगली कहानी बायलोकेशन की ही है, लेकिन वो मौजूदगी के बारे में नहीं बल्कि गैर मौजूदगी के बारे में है। मुंबई निवासी श्री कृष्णा देवलेकर अपनी कहानी कुछ यूं बयां करते हैं,

श्री कृष्णा जी : एक दिन गुरुजी ने मुझे घर से बुलाया और मैं वहां गुड़गांव पहुंच गया। गुड़गांव पहुंचने पर गुरु जी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। उस समय दोपहर के 2 बजे थे। उन्होंने मुझे कहा, "बेटा सेवा करो।" मुझे पता ही नहीं चला। 14 दिन के बाद गुरुजी ने मुझसे कहा, "बेटा, अब तुम मुंबई वापस जा सकते हो।" मैंने कहा, "गुरु जी, मैंने तो किसी को कुछ बताया नहीं था अपने ऑफिस में। मैं सीधा भागकर आपके पास आ गया।" उन्होंने कहा, "अच्छा, चिंता मत कर। मैं बैठा हूं ना आप क्यों चिंता करते हो।" उसके बाद मैं पूरी तरह भूल गया।

सवाल : और फिर जब आप वापस आए तो?

श्री कृष्णा जी : मैं वापस आया तो डर डर के ऑफिस पहुंचा और देखा तो कोई ऑफिस में मेरी गैर हाजिरी के बारे में कोई बात ही नहीं करता। मैं कैंटीन में भी गया, तो वहां भी किसी ने कुछ नहीं पूछा, क्योंकि कैंटीन वाले भी हमारे साथ ही रहते हैं ना। और मेरा कार्ड भी जगह पर था, वर्ना कोई भी लेट आता है तो कार्ड देते नहीं है। उसे पर्सनल विभाग में जाकर अपना कार्ड लेना पड़ता है। तो कार्ड भी जगह पर था। जब मैंने पंच किया और अंदर गया तो पर्सनल डिपार्टमेंट ने भी मुझसे कुछ नहीं पूछा क्योंकि उनको पता रहता है ना कि कोई दो-तीन दिन तक प्रेजेंट है या एब्सेंट। बाद में उन्होंने भी मुझसे कुछ नहीं पूछा और ना मैंने फॉर्म भरा। मैं भी चुप बैठा और किसी से कोई बात नहीं किया। मैं यह देखकर हैरान था कि कोई मुझसे मेरी गैर हाजिरी के बारे में बात ही नहीं कर रहा है। ना पर्सनल डिपार्टमेंट, ना ही ऑफिस के किसी और व्यक्ति ने मुझसे कुछ पूछा। ये सबकुछ ऐसा था मानों मैं गुड़गांव में भी था और यहां भी। उसके बाद मेरी सैलरी भी आ गई। किसी को कुछ पता ही नहीं लगा कि क्या हुआ था।

बरूज़ वेलकम जैसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय संस्थान में गैरहाजिर रहना और किसी को कुछ पता ना होना, शायद इसी सूरत में मुमकिन है कि या तो लोगों ने उन्हें कई बार देखा, जैसे वो रोज देखते थे। या फिर जैसे उनकी गैर मौजूदगी को लेकर सभी की आंखों पर कोई पर्दा पड़ गया हो। मामला कुछ भी रहा हो, यह कहानी बड़ी दिलचस्प है।

मैं नहीं जानता कि किस चीज को हज़म करना ज्यादा मुश्किल है - दोहरी मौजूदगी या अदृश्यता?

गुरुदेव बखूबी दोनों ही अवस्थाओं का अभ्यास करते थे।

योग ने इस बात को माना है कि सिद्ध योगी अपने आसपास एक ऊर्जा चक्र का निर्माण करके खुद को अदृश्य बना सकते हैं, जिससे सामान्य लोग उन्हें नहीं देख पाते हैं।

हालांकि गुरुदेव ने हमें कभी नहीं सिखाया कि ऐसा कैसे करते हैं, लेकिन मुझे इस बात का एहसास तब हुआ, जब वो मुझे बद्रीनाथ के प्रसिद्ध मंदिर ले गए थे। उन्होंने मंदिर के बाहर मुझसे कहा कि अंदर जाकर बद्रीनाथ जी को कहो कि बड़े भईया मैं आपको झप्पी पाने आया हूँ। उस समय मुझे अध्यात्म का ज्यादा अनुभव नहीं था, इसलिए मुझे यह भगवान के अपमान की तरह लगा। मैंने जिद करके उन्हें अपने साथ चलने को कहा। मंदिर के बाहर बड़ी कतारें लगी थीं, जिन्हें मंदिर के पुजारी मिलकर संभाल रहे थे। हम दोनों सीधे अंदर चले गए और ना तो किसी ने हमें देखा और ना ही हमें रोका। हम अंदर गए और किसी की नजर में आए बिना बाहर भी आ गए।

बिंदु लालवानी ने अपने आध्यात्मिक सफर में सेवा को बड़ी श्रद्धापूर्वक अपनाया है। वो उन दो खास अनुभवों का जिक्र करती हैं, जो उनके पिता ने उन्हें बताए थे।

बिंदु जी : तो एक बार क्या हुआ कि पापा जी और गुरुजी कनॉट प्लेस में गुरु जी के ऑफिस से गुड़गांव के सेक्टर 7 गए थे। वहां गुरु जी से मिलने के लिए भारी भीड़ इंतजार कर रही थी। तो मेरे पिता ने कहा, "गुरुजी इतने सारे लोग इंतजार कर रहे हैं, आपके कमरे तक पहुंचने में तो कुछ घंटे लग जाएंगे।" गुरुजी ने कहा, "पुत्तर वो मुझे तभी रोकेंगे, जब वो मुझे पहचानेंगे।" पापा जी ने कहा, "गुरु जी, वो आपको कैसे नहीं पहचानेंगे? आप उनके सामने से गुजरेंगे तो वो आपको पहचान ही लेंगे। वो आपका इंतजार कर रहे हैं।" तब गुरु जी कार से बाहर निकले और गेट की तरफ चल पड़े और वहां इकट्ठा भीड़ के सामने से गुजरते हुए घर के अंदर चले गए। पापा जी भी उनके पीछे-पीछे थे और उन्हें किसी ने भी नहीं पहचाना। एक इंसान ने भी नहीं पहचाना और वो सीधे उनके कमरे में चले गए। तो ना सिर्फ वो खुद को अदृश्य कर लेते थे, मतलब पूरी तरह अदृश्य, बल्कि वो अपने साथ रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए भी ऐसा ही कर सकते थे। वो 80 के दशक की बात थी।

और ऐसा ही एक वाक़या तब हुआ, जब गुरु जी और पापा जी श्रीनगर में थे और उनकी कार खराब हो गई थी और उन्हें एक ऑटो पार्ट की जरूरत थी। वो पास की एक स्पेयर पार्ट्स की दुकान में गए। वहां गुरुजी का एक बड़ा-सा रूप (तस्वीर) लगा हुआ था और दुकान का

मालिक उसके सामने धूप जला रहा था। मेरे पिता ने गुरुजी से धीरे से कहा, "गुरु जी, वो आपके रूप के सामने धूप जला रहा है। वो आपसे ऑटो पार्ट्स के पैसे नहीं लेगा।" जबकि पापा जी को पता था कि गुरु जी यदि उसका पैसा नहीं देंगे, तो वो उसे बिल्कुल नहीं खरीदेंगे।

गुरुजी ने भी उसी सादगी से कहा, "तुम फिक्र मत करो।" और क्या आप यकीन करेंगे कि वो आदमी मुड़ा और उसने पूछा, "आपको क्या चाहिए? मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?" और गुरु जी ने असल में ऑटो पार्ट्स खरीदे, उसके पैसे दिए और फिर वहां से गए। इस आदमी ने पापा और गुरु जी को बिल्कुल नहीं पहचाना।

गुरुदेव के ज़रिए जितने भी करिश्माई कारनामे हुए, उनकी पूरी जानकारी में हुए। कभी-कभी कुछ एहसास उनके शिष्यों को भी हुए, लेकिन उन्हें इस बारे में कोई एहसास नहीं हुआ। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों हुआ, लेकिन एक वाक़या कुछ ऐसा हुआ जो इस बात को साबित करता है।

आशीष जी कज़ाख़िस्तान में एक असाधारण जगह पर पहुंचे। वहां, उनके साथ कुछ ऐसा हुआ जो तर्क के लिहाज से बड़ा अजीब था। इस पर यकीन करना आसान तो नहीं लेकिन आखिर आध्यात्मिक शक्ति भला आम इंसान के यकीन की बात कहां होती है। इस पर यकीन करना या ना करना तो एक सवाल है।

आपका सवाल!

सवाल : तो आशीष जी आपने एक बार मुझसे बताया था कि आप कज़ाख़िस्तान में थे और लोग आपकी तस्वीरें नहीं ले पाए थे, जबकि लोग आपको देख सकते थे लेकिन आप तस्वीरों में दिखाई नहीं दिए। यह सुनने में बड़ा नाटकीय लगता है। क्या ऐसा सचमुच हुआ था?

आशीष जी : हां कज़ाख़िस्तान में एक जगह है। यह मुख्य शहर से एक घंटे की दूरी पर है। वहां एक झील भी है। हम लोग वहां कुछ दोस्तों के साथ गए थे और वहां हमने एक पहाड़ी पर अपनी गाड़ी रोकी और हम बाहर निकले। जब मैं बाहर निकला तो सिर्फ चार-पांच मिनट में मुझे अपने आप में खुद से दोगुने, तिगुने आकार का एहसास हुआ। मैं एकदम विशाल और शक्तिशाली हो गया। मेरे दोस्तों और मेरी पत्नी के लिए मेरा व्यवहार और बातें बड़ी मजेदार हो गईं। मैं ऐसा बर्ताव करने लगा जैसे मैं सबसे ताकतवर इंसान था और मुझे लगा कि मेरे आस-पास बहुत छोटे-छोटे लोग हैं। वो मेरी तस्वीरें खींच रहे थे और मैंने अपने दोस्त को बड़े मजेदार या यूं कहिए बड़े भारी अंदाज में कहा, "मेरी तस्वीरें मत खींचो।" और जब उसने मेरी तस्वीर ली और फिर जब हमने वो तस्वीर देखी, तो सिर्फ मेरे कमर के नीचे का

हिस्सा नजर आया। मेरी कमर के ऊपर का हिस्सा नदारद था। मेरी कमर के ऊपर की तस्वीर आई ही नहीं थी। उस शक्ति को बयां करना मुश्किल है, कि मैंने वहां क्या महसूस किया था।

सवाल : क्या वो कोई खास जगह थी, जहां गए थे या फिर वो कहीं सड़क के बीच में थी?

आशीष जी : हमारे साथ जो दुभाषिया थी, मैंने उससे उस जगह के बारे में कुछ सवाल पूछे थे कि उस जगह के बारे में क्या खास है? उसने हमें बताया कि यहां बहुत-से लोग ध्यान करने आते हैं। उसने कहा, "मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन बहुत से आध्यात्मिक लोग यहां इस हवा को महसूस करने आते हैं।" तो शायद मैंने भी यही महसूस किया था या उस हवा में कुछ ऊर्जा या कुछ और था। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों हुआ क्योंकि मैं सिर्फ अकेला रहना चाहता था ना कि सबके साथ, और ये एक और मजेदार बात थी कि मैं चाहता था कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाए। जैसे कि जब आप सांस लेते हैं और मैं उस हवा की ज्यादा से ज्यादा एनर्जी को अपने अंदर लेना चाहता था। मुझे इसमें मजा आ रहा था। यह सिर्फ एक बार नहीं हुआ। एक और तस्वीर थी, जहां मेरा दोस्त मेरे साथ था और मेरी तस्वीर खींचने की कोशिश कर रहा था और उस तस्वीर में भी मैं अदृश्य था।

आशीष जी की पत्नी कनिका खन्ना उनके इस अनुभव की गवाही देती हैं।

सवाल : कनिका मुझे आपके पति आशीष ने बताया कि कज़ाख़िस्तान के अल्माटी में एक बड़ा दिलचस्प अनुभव हुआ था, जब वो आपकी नजरों से अदृश्य हो गए थे। क्या यह सच है?

कनिका जी : जी हां, यह सच है। और जहां तक मुझे याद है यह तीन चार साल पहले की बात है। हम कुछ दोस्तों के साथ अल्माटी की यात्रा पर थे। एक दिन हम एक फ्रोज़न लेक पर घूमने गए। हम वहां बहुत-सी तस्वीरें खींच रहे थे और आखिरी में हम एक चट्टान पर बैठे हुए थे। आशीष वहां बैठा हुआ था या वहां बैठा हुआ नजर आ रहा था। हां अब मैं याद कर सकती हूं कि वो किसी चीज के बारे में सोच रहा था। वो थोड़ा गुमसुम-सा दिख रहा था। और मैंने उस जगह को छोड़ने से पहले एक तस्वीर खिंचवाने को कहा था और वो उतना इच्छुक नजर नहीं आया। मैंने तस्वीर खींची और जब हम अपनी कार में पीछे बैठकर होटल चले गए। बाद में जब मैं अपने फोन की फोटो लाइब्रेरी देख रही थी तो इसमें आशीष की एक तस्वीर देखी जिसमें उसका शरीर के ऊपर का हिस्सा, उसका कंधा दिखाई नहीं दे रहा था। यह बिना सिर की तस्वीर थी।

सवाल : तो वो आपको दिख रहे थे, लेकिन तस्वीर में नहीं दिख रहे थे?

कनिका जी : जी हां, तस्वीर खींचते वक्त वो ठीक मेरे बगल में बैठे थे। तो वो मुझे दिखाई तो दे रहे थे।

आशा सेखरी एक ऐसी महिला हैं, जिनकी 40 साल से ज्यादा वक्त से गुरुदेव में आस्था है अगली कहानी उनकी बेटी की शादी की है जो 80 के दशक में हुई थी।

एक दुल्हन और दो चमत्कार।

इस कहानी में गुरुदेव की ये लीलाएं गौरतलब है...

एक, वो शादी वाले दिन दुल्हन के घर पहुंचकर उससे मिले, लेकिन किसी को भी इसका पता तक नहीं चला।

दो, शादी के कुछ साल बाद वो उसकी रक्षा करने के लिए नॉर्वे के ओस्लो में भी अपने सूक्ष्म अवतार में नजर आए।

विश्वसनीय? या अविश्वसनीय?

आइए जानते हैं!

आशा सेखरी जी : मेरी बिटिया की शादी थी, रिश्ता उसका आया था नॉर्वे से। और वो रिश्ता भी गुरुजी ने ही फाइनल किया था। क्योंकि मैंने बोल दिया था कि जब तक गुरु जी हां नहीं करेंगे, तब तक बातचीत आगे नहीं बढ़ेगी। तो गुरुजी ने कहा कि यह लड़का हमारे लिए ही बना है। हम यह रिश्ता यहीं फाइनल करेंगे, यहीं होगा। उसका रिश्ता फाइनल कर दिया, फिर उसकी शादी की डेट फिक्स हो गई तो 16 जुलाई की डेट निकली और हमने शादी की तैयारियां शुरू कर दीं। अब शादी वाले दिन बिटिया ने गुरु जी को फोन किया और उनसे कहा, "गुरु जी, अगर आप शादी में नहीं आओगे तो मैं जयमाला नहीं डालूंगी। मैं वेट करूंगी आपका, स्टेज पर खड़ी रहूंगी।" तो गुरु जी ने कहा, "बेटा तेरी मां (माताजी, गुरुदेव की पत्नी) आएंगी, बच्चे आएंगे, सब आएंगे। मेरा इतनी पब्लिक में आना बहुत मुश्किल है। अब सबको पता था कि शादी में गुरु जी जरूर पहुंचेंगे। मेरी बेटी सेकंड फ्लोर पर तैयार होकर पार्लर से आई थी और वहां बैठी हुई थी। और पीछे एक लकड़ी का दरवाजा था जो लॉक रहता था, मतलब बैक साइड में। तो मुझे भी नहीं पता था, मैं भी नीचे थी, कहां थी, कैसी थी। जब बारात आई और मैं बिटिया को लेने ऊपर गई, तो मुझसे कहने लगी, "मम्मी गुरु जी आए थे मुझसे मिलने।" मैंने कहा, "गुरु जी कहां से आए, हम तो गेट पर खड़े हैं। किसी ने भी गुरुजी को आते हुए नहीं देखा।" यहां तक कि मैंने या मेरे पति ने भी नहीं देखा। मेरी बेटी ने बोला, "गुरु जी अब मैं आपसे बहुत दूर चली जाऊंगी, तो मैं आपको एक कप चाय

बनाकर पिलाना चाहती हूं। तो गुरुजी ने कहा, "बेटा, 20 किलो का तो तूने लहंगा पहना हुआ है, तू चाय कैसे बनाएगी? तू मुझे एक गिलास पानी पिला।" उसने गुरु जी को पानी पिलाया और फिर उसने गुरुजी का हाथ पकड़ लिया और रोई। उसने कहा, "गुरु जी, आप मुझे इतनी दूर भेज रहे हो तो मेरे पास आपकी निशानी क्या होगी।" गुरु जी ने अपनी अंगूठी निकाली जिसे वो 40 साल से पहने हुए थे और उसे मेरी बेटी को दे दिया। इसके बाद वो चले गए। मैं ऊपर गई तो उसने मुझे बताया, "मम्मी देखो, गुरु जी आए थे और उन्होंने मुझे यह रिंग दी है। उन्होंने मुझे बताया कि बेटी तू मुझे जब भी याद करेगी तो इस अंगूठी की तरफ देखना मैं तुझको वहीं मिलूंगा।"

मुझे लगता है कि ये अलाद्दीन के चिराग को टेक्नोलॉजिकल चुनौती होगी, यदि हम इसकी तुलना गुरुदेव की अलौकिक शक्तियों से करेंगे।

जो लोग अपना शरीर छोड़ देते हैं वो आमतौर पर उसके साथ दिखाई नहीं देते, लेकिन क्या कीजिएगा जनाब... कभी-कभी तर्क नाकाम हो जाते हैं। एक ही समय पर अपना वादा निभाना और एक चमत्कार भी करना... बहुत खूब।

आइए सुनते हैं, आगे की कहानी

आशा सेखरी जी : इसके बाद जब वो नॉर्वे चली गई। वहां अपना फैमिली बिजनेस जॉइन करने के लिए उसे लोकल लैंग्वेज सीखना जरूरी था, तो उसने वहां क्लासेस लगा ली। और वो जहां रहती है, वह बड़ा शांत-सा एक पहाड़ी इलाका है। बड़ी शांत जगह है और वहां पर लोग कम नजर आते हैं। उसने मुझे बताया कि शाम के समय शाम 6:30 बजे जब मैं क्लास से वापस आ रही थी, तो 3 लड़के मेरे पीछे पड़ गए। मैं आगे-आगे और वो मेरे पीछे-पीछे थे। वो कहती कि जैसे-जैसे मैं अपने पैरों की रफ्तार बढ़ाती, उनकी स्पीड भी बढ़ जाती थी। उसने कहा कि उसने गुरु जी की रिंग को माथे से लगाया और कहा, "गुरु जी मेरी रक्षा करो।" फिर उसने देखा कि पीछे की आवाज और तेज हो गई है। जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो उसने देखा कि गुरु जी भी उसके पीछे चल रहे हैं और वो लड़के उनके पीछे थे। वो घर तक साथ चलते रहे। घर पहुंचकर मेरी बेटी ने जैसे ही घर का दरवाजा खोला और मुड़कर गुरुजी से अंदर आने को कहा, तो उसने देखा कि वो वहां नहीं थे।

गुरुदेव की सबसे छोटी बेटी अल्का के पति रजनीश शर्मा भी उस वक्त आश्चर्य में पड़ गए थे, जब उन्होंने अपने स्वर्गीय ससुर के सर्व-व्यापक होने की क्षमताएं देखी थीं। आइए जानते हैं उनका क्या कहना है।

सवाल : रजनीश जी, अल्का जी से आपकी शादी के पहले आपके कुछ अनुभव ऐसे रहे थे, जिससे आपको ऐसा लगा कि आपके घर में गुरुदेव मौजूद थे। क्या आप इस बारे में हमें बता सकते हैं?

रजनीश जी : एक महिला थीं, जो हमारे घर के पहले फ्लोर पर रहती थी और वो मेरी मां से बात कर रही थीं। वो शादी की तैयारियों को लेकर बात कर रहे थे। बातचीत में उन्होंने दीवार पर गुरु जी की फोटो को देखा और पूछा क्या यह आपके रिश्तेदार है? मेरी मां ने उनसे कहा, "नहीं, वो हमारे गुरु जी हैं।" महिला ने पूछा, "क्या वो कुछ दिनों के लिए यहां आए थे?" मेरी मां ने जवाब दिया, "नहीं, क्योंकि वो अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनका पहले ही निधन हो चुका है।" फिर उस महिला ने कहा, "यह कैसे मुमकिन है? पिछले कुछ दिनों से रोज मैं उन्हें आपके घर के आसपास टहलते देख रही हूं। आप ऐसा क्यों बोल रही हैं कि उनका निधन हो गया है?" मेरी मां ने कहा, "नहीं यह मुमकिन नहीं है। आपने किसी और को देखा होगा क्योंकि वे करीब 5 साल पहले 1991 में ही गुजर चुके थे।" वह महिला फिर भी नहीं मानी। उन्होंने कहा, "मैं नहीं मान सकती क्योंकि मैं उन्हें हर दिन देखती हूं। मैंने कल शाम भी उन्हें देखा। फिर आप ऐसा क्यों कह रही हैं?" इस बात को लेकर उनकी बहस होती रही और फिर मेरी मां ने कहा, "आपको कुछ गलतफहमी हो गई है!" फिर उस महिला ने कहा, "नहीं, मुझे नहीं हुई है। मैंने इसी व्यक्ति को देखा था। मुझे याद है क्योंकि मैं पिछले तीन-चार दिनों से उन्हें देख रही हूं इसलिए मुझे कोई गलतफहमी नहीं हो सकती।' तब उन्हें यह महसूस हुआ कि यह जरूर गुरुदेव का करिश्मा हो सकता है, क्योंकि उस समय पर हम भी इसी तरह के दूसरे और चमत्कारों का अनुभव कर रहे थे। तो यह हुआ था। और हम सभी बड़े उत्साहित और खुश थे कि गुरु जी हमारे आसपास हैं और हमारी देखरेख कर रहे हैं।

गुरुदेव के शरीर छोड़ने के बाद उन्हें कई बार देखा गया। आलोचक इसे हसरतों के ख्याल या फिर जरूरत से ज्यादा सोच का नतीजा कह सकते हैं, लेकिन सच तो यह है कि आप उनकी काबिलियत को कतई नजरअंदाज नहीं कर सकते। जो बात बहुत-से इंसानों की समझ के परे है, वो उनकी दुनिया में आम थी।

आइए ऐसी ही एक और अविश्वसनीय झलक की पड़ताल करते हैं...

सरोज जी और उनके पति नरेंदर जी, जिनका उल्लेख भृगु संहिता में है और जिनकी कहानियां दूसरे पॉडकास्ट्स में बताई गई हैं, उन बहुत-से लोगों में से हैं, जिन्होंने यह झलक देखी है।

सरोज जी : हमने जुलाई 1992 में महारुद्र यज्ञ किया था। हमने भृगु संहिता में पढ़ा था कि यह महारुद्र यज्ञ पृथ्वीलोक के लिए बहुत जरूरी है।

नरेंदर जी : भृगु संहिता में अक्सर यह आया कि हे पुत्र, मुझे लघु रूद्र यज्ञ चाहिए, मुझे महारुद्र यज्ञ चाहिए और मुझे अति महारूद्र यज्ञ चाहिए। उस समय हमें इन यज्ञों के बारे में नहीं पता था। इसके पश्चात हमें बहुत खुशी हुई कि गुरु महाराज का यह वचन है कि उनको यह यज्ञ चाहिए। तो हमने महारुद्र यज्ञ को संपन्न करने के लिए अपने घर में एक यज्ञशाला बनाई और उसमें 15-16 ब्राह्मण ने हिस्सा लिया। जिस दिन हमारे यहां पर यज्ञ होना था उससे एक दिन पहले शाम को लगभग 7:30 बजे, हमारे घर में जहां गुरु जी का स्थान बना हुआ है, वहां पर हमने एक सेकंड के लिए गुरु जी को साक्षात रूप में देखा। हमने कहा, "गुरु जी" और वह अदृश्य हो गए। इसके पश्चात जब यज्ञ पूरा हो गया, तो हम सभी परिवार के सदस्य ड्राइंग रूम में डाइनिंग टेबल पर बैठे हुए थे और खाना खाने के लिए तैयार थे। लगभग साढ़े सात, पौने आठ बजे शाम को अचानक सभी ने देखा कि कोई पीछे यज्ञशाला की तरफ गया सफेद कपड़ों में। हम सभी इतने सचेत थे कि हमने सोचा कि कहीं यह गुरुजी ना हो। हम नीचे बैठे हुए थे। हमने देखा गुरुजी सफेद कपड़ों में सफेद चप्पल पहनकर सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। हमने उन्हें नीचे उतरते हुए देखा, मैंने भी, मेरी धर्मपत्नी ने और मेरे बच्चों ने भी, जो छोटे थे। कुछ साल बीत जाने के बाद करनाल में, जहां हमारा घर है, वहां हमने गुरु जी का एक स्थान बनाया हुआ है। मेरी जो बेटी है, जो आजकल पीएचडी कर रही है, उसने वहां गुरु जी को कुछ सेकंड के लिए खड़े हुए देखा। इससे पहले कि वो खुद को संभालकर यह बता पाती कि क्या हुआ था, गुरुजी वहां से भी अदृश्य हो गए। ठीक इसी प्रकार से मुझे भी एक बार करनाल में उनको ऐसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

मैं सुधीर को तब से जानता हूं जब हम बच्चे थे। उनकी जिंदगी के सफ़र में बड़े उतार-चढ़ाव रहे हैं। ढेर सारी कामयाबी और इंटरनेशनल स्तर का रहन-सहन से लेकर शराब की लत तक, उनकी किस्मत ने बहुत-से मोड़ लिए। हालांकि उन्होंने बड़ी मुश्किल से शराब छोड़ी और खुद को पाक साफ किया लेकिन फिर भी कुछ मुश्किलों से जूझ रहे थे।

इन मुश्किलों का हल उन्हें तब मिला जब उन्हें गुरुदेव के दर्शन हुए, वो भी तब, जब, गुरुदेव अपना शरीर छोड़ चुके थे। और तब महागुरु ने उन्हें अपनी छत्रछाया में ले लिया।

जरा इन्हें भी सुनिए।

सुधीर जी : एक सुबह मैं सोकर उठा। मैं ऐसे ही बिस्तर पर पड़ा हुआ था, मेरी आंख खुली थी और अचानक मेरे चारों तरफ खामोशी छा गई और मेरी आंखें अपने आप बंद हो गई। वहां मैंने एक सज्जन को देखा जो बड़े विशाल स्वरूप में थे 7-8 फुट ऊंचे। कमीज़ की आस्तीन मुड़ी हुई, सफेद कपड़ों में थे जो मेरी ओर देख रहे थे। उनकी आंखों में बड़ी विनम्रता थी। उन्होंने अपनी बाहें फैलाकर मेरी ओर देखा और कहा आ पुत (पुत्र)। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी सारी अनुभूतियां बंद हो गईं, बस मुझे इस इंसान का ध्यान था, जिसे मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा। मेरे सिर के पीछे की ओर से एक तेज आवाज सुनाई दी, 'गुड़गांव के गुरु जी'। फिर सबकुछ सामान्य हो गया। मेरी बाहर की चेतना वापस आ गई और मेरे कमरे में सबकुछ सामान्य रूप से दिखने लगा। मैं कंप्यूटर पर गया और मैंने गुरुजी ऑफ गुड़गांव को खोजा। फिर कुछ यहां-वहां खंगालने के बाद मुझे सेक्टर 10 के बारे में पता चला और फिर मुझे गुरु जी और उनकी तस्वीरें नजर आईं।

और यह कोई ख्याल या सपना नहीं था। इसके बाद यह बहुत बार हुआ। जब भी गुरुजी प्रगट होते हैं, तो मैं हमेशा अपनी चेतना में रहता हूं। जैसे वो और मैं यहीं थे और कोई बड़ी शक्ति और शांति ने आपकी इंद्रियों को निष्क्रिय कर दिया हो।

रवि त्रेहन जी तो अब ये मानने लगे हैं कि गुरुदेव जिंदगी के बाद एक पार्ट टाइम ट्रैवल एजेंट की भूमिका निभा रहे हैं। ज़रा उनके इल्ज़ामों पर तो गौर फरमाइए,

रवि जी : एक बार फरीदाबाद में एक परिवार था। उनकी बहुत सी समस्याएं थी और तब गुरुदेव उनसे फरीदाबाद में मिले और उनसे कहा, "गुड़गांव जाओ, वहां स्थान के दर्शन करो और आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी।" उन्होंने कहा, "हम कभी उस जगह पर नहीं गए।" गुरुदेव बोले, "कोई बात नहीं।" वो उस परिवार के साथ गुड़गांव तक गए और उन्हें जय सिनेमा पर छोड़ दिया। वो स्थान जय सिनेमा के ठीक पीछे था। मैं पहले की बात कर रहा हूं कि जब उसे जय सिनेमा कहा जाता था। वो वही जगह है, जहां आज हल्दीराम का आउटलेट है। उनको वहां छोड़ने के बाद जैसे ही उन्होंने सेक्टर 7 में स्थान में प्रवेश किया, उन्होंने वहां गुरुदेव की तस्वीर देखी। उस परिवार ने वहां मौजूद लोगों से पूछा, "यह व्यक्ति कौन है?" उन्हें बताया गया कि यह गुरुदेव की तस्वीर है और वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। उन्होंने कहा, "क्या बात कर रहे हैं? उन्होंने अभी-अभी हमें जय सिनेमा तक छोड़ा है और हमें बताया कि स्थान जाकर अपनी मुश्किलें और तकलीफ बताओ और हमारा काम हो

जाएगा।" ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जहां लोगों ने गुरुदेव की झलक देखी है या देखी थी या तो गुड़गांव में यह कई बार नीलकंठ धाम में भी।

शायद ये कहानियां काफी नहीं। इसीलिए हमें लगा कि हम ऐसे और भले इंसानों की कहानियां सुनाएं, जिन्होंने गुरुदेव के निधन के लंबे समय बाद उन्हें उनके शारीरिक रूप में देखा जबकि वो गुरुदेव को जानते तक नहीं थे।

अब हम आपको बिट्टू जी से रूबरू कराते हैं, जो हाफ पैंट पहने एक लड़के के रूप में गुरुदेव के पास आए थे। वो गुरुदेव के भतीजे गग्गू जी के सहपाठी भी थे। बड़ी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। जब से गुरुदेव ने उनका इलाज किया था, तब से वो वहीं गुरुदेव की मंडली का हिस्सा बन गए - वो चार मसखरों में से एक हैं। वो स्थान संचालन के कामों में ज्यादातर वक्त बिताते थे और वहां आने वालों से मिलते थे। वो आज भी यही करते हैं।

आइए मिलते हैं बिट्टू जी से।

बिट्टू जी : यहां कंस्ट्रक्शन चल रहा था। तो एक दिहाड़ी मजदूर जिसका हमसे कोई लेना देना नहीं है वो आया और हमसे पूछा, "कहां है गुरुजी?" किसी ने फोटो की तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह रहे गुरुजी।" उसने उस फोटो को देखते हुए पूछा, "कहां मिलेंगे?" उसे बताया गया कि गुरु जी तो बहुत समय पहले शरीर छोड़ चुके हैं। उस मजदूर को यह सब कोई बता रहा था। वो कहता, "कैसे क्या? क्या बात कर रहे हो बाबू जी?" उसने पूछा, "क्या मतलब?" उस मजदूर ने कहा, "ये साहब तो रोज सफेद कपड़ों में खड़े होकर सिगरेट पी रहे होते हैं। जहां लंगर बनता है, वहां टहलते हैं और सिगरेट पीते हैं।"

जिस मजदूर ने नजफगढ़ में समाधि के निर्माण के समय गुरुदेव को देखा था, उसे भला क्या पता था कि गुरुदेव का शारीरिक स्वरूप तो था ही नहीं और जो वो देख रहा था, वो सिर्फ एक परछाई थी। लेकिन एक बात इस घटना को अजीब जरूर बना देती है। शायद गुरुदेव ने सिगरेट के पैकेट पर लिखी वो चेतावनी नहीं पढ़ी कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अब यदि वे अपने निराकार स्वरूप में सिगरेट पीते नजर आ रहे थे, तो हमें कहना पड़ेगा कि इससे सिगरेट कंपनियों को अपने कारोबार के लिए एक और बाजार मिल गया.... एक अलौकिक बाजार।

देवराज बचपन से ही स्थान से जुड़े हुए हैं। आज वो मुंबई और लोनावला के स्थानों पर सेवा करते हैं। उनके ऐसे बहुत-से अनुभव रहे हैं। आइए उन्हीं में से एक का जिक्र करते हैं, जिस पर यकीन करना उनको खुद को मुश्किल लगता है।

इस बार ये दो शहरों की कहानी नहीं है, बल्कि दो बच्चों का किस्सा है।

देवराज जी : इस घटना को 10 साल से ज्यादा समय हो गया है। उसी वक्त प्रीति और मेरी शादी भी हुई थी। हम साथ में अपनी नई जिंदगी शुरु कर रहे थे, अपने करियर में सेटल हो रहे थे। उस समय पर हम दोनों के परिवारों का कहना था कि हम अपनी फैमिली शुरू करने के बारे में भी सोचें, खास तौर पर मेरी मां के खराब स्वास्थ्य को देखते हुए। वो अपने पोते पोतियो के साथ वक्त बिताने की आस लगाए बैठी थीं। प्रीति और मैंने इस पर चर्चा की और हम भी इस बात पर सहमत थे। तो हम अपने-अपने परिवारों की यह इच्छा पूरी करने की कोशिश कर रहे थे। हमने इसे ज्यादा गंभीरता से ले लिया और यह हमारे लिए कोई काम या कोई प्रोजेक्ट जैसा हो गया। नतीजे हासिल करने का तनाव, उल्टा असर कर रहा था, जिसने हमारी जिंदगी को मुश्किल बना दिया था।

मैं स्थान पर गया और मैंने मन ही मन गुरुदेव से बात की। और फिर मैंने उनसे अपनी मन की व्यथा बताई। उनसे बताया कि हम क्या करने की कोशिश कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं और कैसे इसने मानसिक रूप से हमारी जिंदगी में उथल-पुथल मचा दी है। मैंने उनसे एक बड़ी अजीब-सी गुजारिश की। मैंने कहा, "गुरुदेव मैंने सुना है कि आप हर जगह मौजूद हैं। और यदि ऐसा है तो मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमें जुड़वा बच्चे होने का आशीर्वाद दें।" तो अगले एक डेढ़ महीने तक मैं हर गुरुवार को स्थान जाता था। मैं गुरुदेव से यही प्रार्थना करता था। और मुझे लगा कि यह प्रार्थना से ज्यादा उनके सर्वव्यापी होने को एक चुनौती की तरह थी। फिर एक गुरुवार जब मैंने स्थान पर झुककर माथा टेका, तो मुझे एक आवाज सुनाई दी जिसने मुझसे कहा, "तुझे जुड़वां होंगे और दोनों बेटे होंगे।" मैं हैरान रह गया। मुझे नहीं पता कि मैंने उस समय किस तरह प्रतिक्रिया दी, लेकिन वो पहली बार था जब मैंने एक आवाज सुनी थी। मुझे कुछ समझ में नहीं आया और मैं स्थान से बाहर आ गया। हमें इसके तुरंत बाद एक ट्रिप पर जाना था और जब हम ट्रिप से वापस आए तो हम सभी को पता चला कि प्रीति गर्भवती है। जब हमने सोनोग्राफी की तो हमें पता चला कि वो एक महीने से गर्भवती थी। हमें बताया गया कि हमें जुड़वा बच्चे होंगे। हमें बहुत आश्चर्य हुआ और मैं तो पूरी तरह हैरान रह गया। क्योंकि 99% मामलों में जुड़वां बच्चों में एक लड़का और एक लड़की होती है। और प्रीति आधे से ज्यादा गुलाबी रंग के कपड़े खरीदने को कहती थी। उसने मुझसे मेरी राय पूछी तो मैंने कहा, "यदि दोनों लड़के हुए तो? और फिर उनमें से एक हमेशा पूछेगा कि मुझे गुलाबी कपड़े क्यों पहनाए थे?" मैंने उसे कह दिया कि मुझे तो

पूरा यकीन है कि हमें दो लड़के होंगे। सच कहूं तो मुझे यकीन नहीं था लेकिन मैंने गुरुदेव की आवाज सुनी थी। और जब हम सर्जरी रूम में गए तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना ना रहा क्योंकि दोनों जुड़वां लड़के थे। हमारी आंखों से आंसू छलक रहे थे, लेकिन मुझे लगता है कि वो किसी और वजह से थे। वो पहली बार था जब मैंने गुरुदेव के होने को महसूस किया था। वो किसी भी घटना से पहले उसके बारे में जान लेते थे और हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ।

रिधिम जी, जो देहरादून में सेवा करते हैं, अस्थल पर स्थापित गुरुदेव की मूर्ति को लेकर एक दिलचस्प अनुभव बताते हैं। इस प्रतिमा को लेकर कुछ और लोगों के भी अलग-अलग अनुभव रहे हैं।

रिधिम जी की मानें तो यह प्रतिमा अपना सिर घुमाती है।

अल्पना अस्थल पर नियमित रूप से आती हैं और एक परम भक्त हैं। उनके अनुसार यह प्रतिमा नीले रंग की हो जाती है।

और बाकी लोगों के लिए यह मूर्ति उनकी दुआएं कबूल करती हैं।

अस्थल देहरादून में है और ये वो जगह है, जिसे एक कर्णबधिर स्कूल के विस्तार के लिए खरीदा गया था, और इसकी प्रेरणा दशकों पहले गुरुदेव से ही मिली थी। इसका कवच एक शिवालय था, जिसे शुरू करने में 16 साल का समय लगा। हुआ यूं गुरुदेव एक सपने में आए और उन्होंने इसे पूरा करने को कहा।

अस्थल पर गुरुदेव की जो मूर्ति स्थापित है, वो हुबहू उनकी तरह दिखने वाली सर्वश्रेष्ठ मूर्तियों में से एक है। उसी शिवालय में शिव परिवार की मूर्ति रखी गई है, जिसे जयपुर के एक कारीगर ने बनाकर 22 साल तक अपने पास रखा हुआ था। भाग्य का लेखा देखिए... 22 साल बाद, वही मूर्ति अस्थल पर स्थापित की गई। इस जगह का अपना ही करिश्मा है।

करमजीत जी, गुरुदेव के पुराने श्रद्धालुओं में से एक हैं, जो एक बड़ी अजब कहानी बताते हैं कि कैसे गुरुदेव ने उनसे देहरादून में अस्थल में स्थान बनाए जाने का जिक्र किया था, और वो भी उसकी स्थापना से 35 साल पहले! उन्होंने करमजीत जी को ध्यान अवस्था में इस जगह के दर्शन भी कराए थे।

सवाल : करमजीत, आपने डेढ़ साल पहले मुझसे कहा था कि गुरुदेव ने आपसे कहा था कि देहरादून में अस्थल पर एक स्थान आएगा। उसके बारे में आप क्या बता सकते हैं? कब कहा था और क्या कहा था?

करमजीत जी : गुरु जी ने कहा था कि बेटा एक स्थान वहां बनेगा और बहुत से लोग आएंगे और कई लोगों का उद्धार होगा।

सवाल : कहां पर?

करमजीत जी : देहरादून में।

सवाल : और कोई वर्णन किया था उन्होंने कि कहां बनेगा कैसे बनेगा और क्या होगा?

करमजीत जी : ये कुछ नहीं बताया था उन्होंने। बस देहरादून का जिक्र किया था और यह नहीं बताया था कि वह कहां बनेगा। ना उन्होंने बताया ना मैंने पूछा। लेकिन देहरादून का जिक्र जरूर हुआ था, वह तो वैसे ही उन्होंने दिखाया मुझे।

सवाल : क्या दिखाया?

करमजीत जी : यह दिखाया कि चारों तरफ पहाड़ होंगे और उसके बीच में वह स्थान होगा।

सवाल : तो जब आप अस्थल पर आए थे, तो क्या आपको वही दृश्य नजर आया था या कुछ और?

करमजीत जी : वही चीज मुझे महसूस हुई थी और मैं इसीलिए वही देखने के लिए वहां गया था। यही चीज बहुत साल पहले गुरु जी ने मुझे मेरे सपने में दिखाई थी।

सवाल : सपने में दिखाई थी?

करमजीत जी : सपने का मतलब यह होता है जब आप अर्थ चेतना में जाते हो, जाग भी रहे हों और सो भी रहे हों।

सवाल : समझ रहा हूं

करमजीत जी : वो एक ऐसी अवस्था होती है, जिसको आदमी कहता है कि ध्यान की अवस्था में जाना।

आइए रिधिम जी के साथ उस स्थान के दौरे पर चलते हैं ...

सवाल : क्या शिवालय में आपको कोई अनुभूति हुई जो आप हमसे बताना चाहेंगे?

रिधिम जी : एक अनुभव मेरे साथ में आता है। गुरु जी हमसे हमेशा कहते थे कि हमें मंदिर में बैठकर अपना पाठ करना चाहिए। तो एक बार जब मैं अकेला था। मैं हर दिन स्थान पर जाकर दिया जलाता था और मैं मंदिर में बैठा था, स्थान पर नहीं। बैठे हुए मैं मूर्ति की तरफ देख रहा था, लेकिन मूर्ति मेरी सीध में नहीं थी। वह मेरे दाईं तरफ थी और मैं एक खंबे से टिककर बैठा था। मैं अपना पाठ कर रहा था। मुझे याद नहीं कि पाठ कितनी देर तक चला

लेकिन यह 10-15 मिनट से ज्यादा समय तक था। मैंने मूर्ति की तरफ देखा और मैं गुरुदेव का चेहरा अपनी तरफ देख सकता था। मूर्ति पर एक हल्की सी मुस्कान थी। जो मूर्ति इस समय वहां है, उस पर एक मुस्कान थी लेकिन वो मुस्कान और जिस तरह वो मेरी तरफ देख रहे थे वो बिल्कुल अलग था। मैं यकीन से यह कह सकता हूं कि प्रतिमा की गर्दन घूमी हुई थी और वो मेरी ओर देख रही थी।

सवाल : और आपको यकीन है कि यह आपकी कल्पना नहीं थी?

रिधिम जी : हां, मुझे पूरा यकीन है कि वो मेरी कल्पना नहीं थी। क्योंकि मैं बहुत जल्दी ऐसी चीजों पर यकीन नहीं करता हूं। इसलिए मैं वहां 10-15 सेकंड तक बैठा। जब मैंने दोबारा देखा तो संगमरमर की इस मूर्ति के चेहरे पर एक निश्चित मुस्कान थी। उसमें कुछ प्राण थे और इसे लेकर मुझे पक्का यकीन है। वो मेरे जेहन में था और यह मुझे अपनी मौजूदगी दिखाने का उनका तरीका था। तो मैंने मूर्ति के सामने माथा टेका, धूप जलाई और बाहर चला आया।

गुरुदेव के दर्जनों शिष्य इस मूर्ति के निर्माण में शामिल थे। 65 से ज्यादा शिष्यों और उनके अनुयायियों ने इस मूर्ति की स्थापना में भागीदारी की थी और प्राण प्रतिष्ठा करके इस मूर्ति को जीवंत किया था, जैसे कि मंदिरों में देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के लिए किया जाता है।

स्थापना में जितने शक्तिशाली लोग शामिल थे, उतना ही प्रभावशाली यह मंदिर भी है।

इस मूर्ति की स्थापना के समय मुंबई के नितिन गाडेकर ने जब आसमान की ओर देखा, तो बादलों में पूर्ण रूप से गठित ॐ की आकृति देखकर दंग रह गए थे। यह महज एक ख्याल नहीं था। पूरा बादल ओम के आकार में था, जो उन्होंने मुझे भी दिखाया था।

इस विषय पर बात चली है तो यह बताना भी बड़ा दिलचस्प होगा कि देहरादून के अस्थल में गुरुदेव की मूर्ति ने अपनी स्वयं के एक चेतना विकसित की है। यहां बहुत-से लोगों ने बड़े कमाल के अनुभव किए हैं।

गुरुदेव के खेमे में नई-नई शामिल हुईं अल्पना की कहानी कुछ ऐसी है कि हमने इसे बताना मुनासिब समझा।

अल्पना जी : मैं अस्थल गई थी क्योंकि मैं बहुत-सी आर्थिक परेशानियों से जूझ रही थी और वो मेरी जिंदगी का सबसे खराब दौर था। मैं अस्थल पहुंची और वो पूरा अनुभव बड़ा खूबसूरत था। क्योंकि मैं देहरादून में ही रहती हूं तो मैं गाड़ी से जाती और वहां मंदिर में जाकर कुछ देर बैठती थी। एक बार जब मैं वहां बैठी हुई थी तो मैंने ऐसे ही गुरुदेव की मूर्ति

से बातचीत करना शुरू कर दिया। उनसे बात करते हुए मेरा मन भारी हो गया, जैसे वो मेरे पिता थे। एक बार जब मैं उनसे मन ही मन बात कर रही थी तो आप यकीन नहीं मानेंगे कि वो मुझे देखकर मुस्कुरा उठे थे। कनाडा में मेरे बेटे की नौकरी चली गई थी, और मैं बहुत परेशान थी। तो उस दिन मैं मंदिर गई और मैंने एक तरह से चिल्लाना शुरू कर दिया। मैंने कहा, "आपको मेरे बेटे को नौकरी देनी ही पड़ेगी। मुझे नहीं पता आप क्या करने वाले हो?" मुझे लगा जैसे वो मुझे सुन रहे थे। सुबह मेरे बेटे ने मुझे कॉल करके बताया, "मम्मा मुझे हिल्टन से कॉल आया है और उन्होंने मुझे इंटरव्यू के लिए बुलाया है।" और आप यकीन नहीं मानेंगे कि उसे वो जॉब मिल गई। मेरा एक और बड़ा खूबसूरत अनुभव है। मैं मंदिर गई थी और मैंने महसूस किया कि यह वो गुरुदेव नहीं है जिन्हें आप जानते हैं। वहां हाथ जोड़े शिव बैठे थे और मैं उनके आसपास वह दिव्य प्रकाश देख सकती थी, वो आभा... और वो वहां पर ध्यान कर रहे थे।

सवाल : जब आप कह रही हैं कि आपने वहां शिव को बैठे देखा, तो क्या आपने शंकर का वो अवतार देखा जो हम तस्वीरों में देखते हैं?

अल्पना जी : हां कुछ-कुछ वैसा ही। मैं देख सकती थी कि उनके सिर के आसपास से तेज रोशनी निकल रही है। लेकिन जिस दिन उनके दर्शन हुए थे उस दिन वो बिल्कुल नीले रंग की दिखी थी, जैसा हम तस्वीरों में देखते हैं। वो ध्यान के आसन में बैठे हैं और मूर्ति नीली है और सिर पर जो जटा है, वो वैसी ही दिखी जैसी फोटो में होती है और सिर से पांव तक एक प्रकाश निकलता दिखा। जैसे कोई औरा होता है। एक बार नहीं बल्कि दो बार दिखा मुझे लगा शायद मेरी आंखें खराब हो गई है लेकिन जब मैंने दोबारा देखा तो मुझे वही रूप दिखा उनका।

सवाल : उस मूर्ति को नीले रंग में देखने के अलावा आपने गुरुदेव की मूर्ति को मुस्कुराते हुए भी देखा। क्या आप यकीन से कह सकती हैं कि यह आपकी कल्पना नहीं है?

अल्पना जी : नहीं यह कल्पना नहीं थी, लेकिन मेरी जिंदगी बदल गई। हम पंजाबी में बोलते हैं ना ठंडक पड़ गई दिल में... ठंड पड़ गई... तो मुझे भी वैसा ही महसूस हुआ। मैं बहुत खुश हूं और बेहद आभारी हूं।

हम इस धरती पर भ्रम में जिंदगी जीते हैं। हमारा नजरिया सिर्फ हमारी इंद्रियों के एहसासों तक सीमित है। हमारी आंखें एक रोशनी की किरण के सिर्फ सात रंग देख सकती है। यह उस किरण का एक सातवां हिस्सा है। इन्हीं दायरों में बंधे हम उपरी आवरण को देख तो सकते हैं, अन्दर झाँक नहीं सकते.

बहुत-से लोग तो अपने अवचेतन मन से भी नहीं जुड़ पाते हैं और इसलिए चेतना की सीमाओं में उलझ जाते हैं।

हम तो रूहों को भी नहीं देख सकते। तो हम शिव के ऐसे दिव्य रूपों को कैसे देखेंगे?

दिव्य प्राणियों की अपनी क्षमता होती है। उनके आत्मज्ञान के कई रूप होते हैं। जहां कुछ का नाता शिव की चेतना से जुड़ जाता है, तो बाकियों के पास असुरों और पाताल लोक के प्राणियों के रूप होते है।

सचेत आंखें इनमें से कुछ भी नहीं देख सकती।

इसीलिए भ्रम है ... इसीलिए अविश्वास है ... और इसीलिए यह जीवनी है,

देख, देखकर

देखकर तेरी तस्वीर,

देखकर तेरी तस्वीर को

आईना हम रह गए।

आईना हम रह गए।